[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

प्रख्यात ज्वाइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. आशीष सिंह से खास बातचीत

ज्वाइंट रिप्लेसमेंट में रोबोटिक सर्जरी एक क्रांतिकारी तकनीक

सामान्य घुटना प्रत्यारोपण सर्जरी में मरीज को अपने पांवों में खड़ा होने में दो दिन लग जाते हैं लेकिन रोबोटिक सर्जरी से महज चार घंटे में ही मरीज को उसके पांव पर खड़ा कर देते हैं।

▲ राजकुमार शर्मा

गुवाहाटी, 24 सितंबर। रोग तो वही है, लेकिन समय के साथ इसके उपचार की तकनीक और तरीके बदलते गए। अब सबकुछ आधुनिक हो गया है। अब आप एक घुटना प्रत्यारोपण कर उस मरीज को महज 4 घंटे में ही अपने पैरों पर खड़ा कर सकते है। यह विश्व में मौजूद नवीनतम तकनीक का कमाल है । मेरा मकसद है कि इस नवीनतम तकनीक का लाभ आम मरीज तक पहुंचे। यह कहना है प्रख्यात आर्थोपेडिक सर्जन डॉ. आशीष सिंह का। अभी तक 30 हजार से अधिक ज्वाइंट रिप्लेसमेंट कर चुके डॉ. आशीष सिंह को घटना तथा कूल्हे प्रत्यारोपण में महारत हासिल है। मृदुभाषी तथा सौम्य व्यक्तित्व वाले डॉ. सिंह ने अपने क्षेत्र में जबर्दस्त सफलता अर्जित की है। यही कारण है कि देश के हर कोने से ही नहीं बल्कि पड़ोसी राष्ट्रों नेपाल, बांग्लादेश, भूटान तथा अफगानिस्तान आदि से भी बड़ी संख्या में मरीज उनसे उपचार कराने के लिए पटना स्थित 'अनूप इंस्टीट्यूट ऑफ आर्थोपैडिक्स एंड रिहैबिलिटेशन' पहुंचते हैं।

'अनूप इंस्टीट्यूट ऑफ आर्थोपैडिक्स एंड रिहैबिलिटेशन' के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. आशीष सिंह महीने में एक बार गुवाहाटी तथा डिब्रूगढ़ का नियमित दौरा करते हैं तथा मरीजों को अपनी सेवाएं देते हैं। **'दैनिक पूर्वोदय'** से एक खास बातचीत में डॉ. सिंह ने हड्डी से जुड़े तमाम रोगों तथा ज्वाइंट रिप्लेसमेंट के संबंध में आई नई तकनीकों और उपचार के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ज्वाइंट रिप्लेसमेंट में रोबोटिक सर्जरी एक क्रांतिकारी तकनीक है, जिसमें मरीज को न सिर्फ बेहद कम तकलीफ, दर्द होता है बल्कि रक्त का नुकसान भी कम होता है और मरीज को अस्पताल भी बहुत कम समय रुकना पड़ता है। इसमें अधिक चीरा भी नहीं लगाना पड़ता तथा उपचार की सटिकता सही होती है।

सामान्य घुटना प्रत्यारोपण सर्जरी में मरीज को अपने पांवों में खड़ा होने में दो दिन लग जाते हैं। लेकिन हम रोबोटिक सर्जरी से महज चार घंटे में ही मरीज को उसके पांव पर खड़ा कर देते हैं। हम यूं कहें कि रोबोटिक सर्जरी हर लिहाज से बेहतरीन है। डॉ. सिंह ने बताया कि पूर्वी भारत में पटना स्थित उनका 'अनूप इंस्टीट्यूट ऑफ आर्थोपैडिक्स एंड रिहैबिलिटेशन' एकमात्र अस्पताल है जो सबसे पहले इस तकनीक को लेकर आया। रोबोटिक उपकरण की लागत करीब 16 करोड़ है तथा हमने कोरोना काल के दौरान यानी पिछले साल 20 अगस्त को इस पर पहली सर्जरी शुरू की थी। कोरोना काल में मैंने कई सफल सर्जरियां की। डॉ. सिंह ने आम मरीजों की इस धारणा को खारीज किया कि इस तकनीक में अधिक पैसा लगता है। उन्होंने कहा कि इस तकनीक को लाने का उनका मकसद धन कमाना कतई नहीं है। यही कारण है कि मरीज से रोबोटिक सर्जरी का उतना ही पैसा लेते हैं, जितना सामान्य सर्जरी में लगता है। उन्होंने कहा कि वे तो आयुष्मान भारत कार्ड वालों का भी अपने यहां उपचार करते हैं।

भारतीयों में घुटना दर्द की समस्या के बारे में डॉ. सिंह ने बताया कि असल में हमारी बदलती जीवन शैली के कारण एक उम्र के बाद यह समस्या पैदा होती है। लोगों का खानपान, अधिक वजन होना, कसरत आदि न करना, धूप न लेना कई कारण है इस बीमारी के। इस बीमारी से दूर रहने के लिए लोगों में जागरूकता बहुत जरूरी है। आप नियमित कसरत करें, खासकर पांव और घुटनों का व्यायाम अवश्य करें। अपने शरीर को हल्का रखें यानी अपने वजन को नियंत्रित रखें। आपको कभी घुटनों की समस्या नहीं होगी।

डॉ. सिंह ने बताया कि वे पिछलें कुछ वर्षों से नियमित गुवाहाटी और डिब्रूगढ़ आ रहे हैं। गुवाहाटी में वे शानिवार (25 सितंबर) को भी मारवाड़ी अस्पताल में रोगियों को देखेंगे। डिब्रूगढ़ में 26 और 27 सितंबर को वे एमएफ अस्पताल में मरीजों को देखेंगे। यूं तो डॉ. सिंह को यह हुनर अपने पिता देश के प्रसिद्ध आर्थोपैडिक सर्जन तथा पद्मश्री डॉ. आरएन सिंह से विरासत में मिली है, लेकिन एमबीबीएस तथा एमएस की पढ़ाई के बाद उन्होंने 2009 से देश के बाहर एडिनबर्ग, अमरीका के ग्लासगो सहित कई विश्व प्रसिद्ध संस्थान से विशेषज्ञ कोर्स कर हड्डी रोग उपचार में महारत हासिल की।

उन्होंने दुनिया की यात्रा की है और विभिन्न देशों में एक सर्जन के रूप में काम किया है। पटना में अपनी जड़ों में वापस आने के बाद, वह उस राज्य तथा अपने देश को वापस देना चाहते हैं, जिसने उन्हें इतना कुछ दिया है। उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दर्जनों सम्मान तथा पुरस्कारों से नवाजे जा चुके डॉ. सिंह की सफलता की यात्रा अनवरत जारी है।